International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2017; Page No. 10-11

मेहरून्निसा परवेज़ का 'कोरजा' और 'अकेला पलाश' उपन्यास में चित्रित मुस्लिम स्त्री

डॉ0 एस0 रजिया बेगम

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग विज्ञान एवं मानविकी संकाय, एस0 आर0 एम0 विश्वविद्यालय, काट्टनाकुलातुर, कांचीपुरम, तमिल नाडु, भारत।

प्रस्तावना

मेहरून्निसा परवेज़ का 'कोरज़ा' 1997 में और 'अकेला पलाश' 1981 में प्रकाशित हुआ था। उपन्यासकार नारी चेतना की प्रमुख कथाकार के रूप में जानी जाती है। यह दोनों उपन्यास नारी जीवन पर केंद्रित है और नारी जीवन के संघर्ष को भिन्न दृष्टिकोणों से देखती है। 'कोरजा' उपन्यास में लेखिका ने नासिमा को कहानी का अवलोकन बिंदु बनाया है जो अपनी नानी की यहां पलती–बढ़ती है और सारी घटनाओं की गवाह है। लेखिका ने इस उपन्यास में कम्मो, रब्बो, मोना दीदी, साजो खाला, नसीमा और साथ ही इन सबका जीवन किन–किन संघर्षो से गुजरता है उसका भली–भांति चित्रण किया गया है, जिसमे नानी भी उसी तरह से शामील है, जैसे अन्य पात्र। उपन्यासकार ने कहानियों की पृष्ठभूमि के लिए बस्तर को चुनना यह बताता है की वह खुद भी उस परिवेश से परिचित है। 'कोरजा' उपन्यास का नामकरण भी लेखिका बस्तर की स्थानीय भाषा से प्रेरित होकर करती हैं –''खेतों से धान की फसल काट ली गयी थी और अब छोटे–छोटे बच्चे हाथों में टोकने लिए खाली हाथों में धान की गिरी हुई बालें ढूंढ रहे थे। बस्तर में इस क्रिया को 'कोरजा' कहते हैं, हल्बी भाषा में।''[1] उपन्यासकार 'कोरज़ा' शब्द को पात्रों के साथ जोड़ते जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अपना दृष्टिगोचर करती है, उपन्यास के इस संदर्भ से इसे भली–भांति समझा जा सकता है –''नसीमा जिंदगी के इन नए–नए रूपों को देखकर दंग थी, हैरान थी। जिंदगी! आदमी का जन्म कितना दुखदायी है! मर कर भी शांति नहीं था। फिर भी लोग कहते हैं आदमी हि का जन्म सबसे अच्छा है।... कभी–कभी जिंदगी कितने अजीब–अजीब खेल दिखाती है कि बुद्धि काम नहीं करती। कैसे एक–एक साथी छूट गए। रब्बो आपा ससुराल चली गई, एहसान ट्रांसफर कराके चले गए और अमित और कम्मो दूसरी दुनिया में चले गए। साथ–साथ कही हुई बातें, वे जोरदार ठहाके, चुहल, पीड़ा सब पीर बन गई थी। लगता है युगों बीत गए, साल–दर–साल पहरे लग गए। सारी गुजरी बातें अब महज किस्सा–कहानी बन गई थीं। बिलकुल उसी तरह जैसे हम किसी पुराने महल के खंडहर में घूम–घूम कर सारी भूली–बिसरी बातों को सुना रहा हो, बस वैसा ही लग रहा था नसीमा को। उस दिन चित्रकुट से लौटते हुए में अनजाने में कितनी सच बात कही थी मोना दीदी ने। जीप का परदा उठाकर पीछे खेतों में झांकते हुए, कटे हुए खेतों में 'कोरजा' चुनने वाले बच्चों को निहार कर मोना दीदी ने कहा था, ''नसीमा, हमारी जिंदगी में भी क्या ऐसी भूली–बिसरी स्मृतियाँ नहीं है, जिन्हें हम सारी उम्र उसे इसी 'कोरजा' के रूप में चुनतें हैं?''[2]

उपन्यास की पात्र कम्मो प्रगतिशील विचारों वाली नारी के रूप में उभरती है। साथ ही यूं ही किसी भी मानती नहीं बल्कि पहले उसे तर्क की कसौटी में कसती है और फिर उसके बात किसी निर्णय पर पहुंचती है। इसलिए एहसान भाई की बातों को वह समर्थन नहीं करती है क्योंकि उसे लगता है कि हर मर्द की तरह एहसान भाई भी उसकी सहेली रब्बो से प्यार का ढ़ोग करता है इसलिए जब शादी की बात आती है तो वह अपना पल्लू झाड़ने के लिए अपनी कमजोरी गिनाने लगता है जिसका वह पूरजोर विरोध करती हुई दिखती है –''एहसान, आखिर कम्मो ने बात उठाई, ''मैं नानी से बात करूं, तुम दोनों की शादी के लिए? तुम तो जानती हो कम्मो, मेरी नई–नई नौकरी है, वह भी परमानेंट नहीं हुई है। ...कम्मो का मुहं तमतमा गया, तैश के कारण उसकी बड़ी–बड़ी आंखों में सुर्ख डोरे उतर आए, एहसान, जो लोग इतने समझदार होते हैं, उन्हें प्यार का नाटक रचने, झूठी तसल्ली देने का कोई हक नहीं, समझे।''[3] तो वहीं दूसरी और पात्र रब्बो भी उस एक व्यक्ति के लिए जो उसके जीवन में प्यार के बीज बोकर चल देता है वह उसके लिए अपनी जिंदगी दांव पर नहीं लगाती बल्कि वह इस बात से वाकिफ है कि –''मर्द हमेशा से बेरहमी कुत्ते रहे हैं... बस हड्डियां चिचोड़ना जानते हैं और कुछ नहीं।''[4]

'कोरजा' उपन्यास में नसीमा की अम्मा फातमा भी अपने पति की अन्याय के प्रति अपना विरोध दर्ज करती है और उसे घर से निकालने आये लोगों को भी यह समझा देती है कि औरत अब उनके हाथो की कठपुतलियां नहीं है कि जब चाहे उसे घर से निकाल बेघर कर दिया जाए, उपन्यास के इस संदर्भ द्वारा इस बात को भली–भांति समझा जा सकता है –''मैं कहती हूं अपनी दाढ़ी की सलामती चाहते हैं तो सब मेरे घर से चले जाओ, वरना मैं चूल्हे की कोलती सब के मुहं में झुलस दूँगी।''[5]

इस उपन्यास में उपन्यासकार ने साजो खाला के माध्यम से इस बात को उठाया है कि मुस्लिम समाज में भी शिक्षा एक बहुत बड़ी कमी है जिसके चलते उसकी आर्थिक हालात बिलकुल कमजोर है, और घर की अर्थव्यवस्था को बनाए रखने के लिए उस व्यक्ति के हाथो के खिलौना बन जाती है जो बचपन में उसके घर का नौकर रहा था और जिसे वे जुम्मन मामू कहकर बुलाते थे। जिसे वह अपनी गोदी में खिलाए होते हैं उसी के शारीर का सौदा करते हुए उसे ज़रा भी शर्म महसूस नहीं होती। रब्बो आपा ने कुछ सोचते हुए आगे बताती है ''साजो खाला रोज जुम्मन मामू के घर जाती हैं। उन्हीं के पास नानी के सारे खेत और यह मकान भी गिरवी हैं। ... इस मकान की कीमत से बढ़कर होती है शायद औरत की इज्जत।'' फिर रब्बो कुछ देर के लिए चुप हो जाती है, ऐसा लगता है जैसे वह अपने को समझा रही हो या उस डर से अपने को उबारने की कोशिश कर रही हो कि आज साजो खाला नहीं होती तो वो उनकी जगह होती, फिर थोड़ी देर बाद –''नसीमा, जगदलपुर के पठान क्या सही मुसलमान हैं? ब्याज खाते हैं, रंडीबाजी करते हैं, घूस देते–लेते हैं।''[7] मुसलमानों में शिक्षा की कमी से आर्थिक स्थिति का हाल अच्छा नहीं है। इसलिए उपन्यासकार ने कम्मो जैसे पात्र के माध्यम से यह सिद्ध कि शिक्षा लोगों के विचारों को किस तरह परिवर्तित करता है और अपना अच्छा बुरा सोचने पर विवश करता है, उपन्यास की पात्र कम्मो शिक्षित है इसलिए उसे दकियानूसी रीति–रिवाजों और परंपराओं में कोई दिलचस्पी दिखाई नहीं पड़ती है। स्त्रियों का चूड़ी पहनने भी उसे पसंद नहीं लगता, उसे लगता है कि यह सब स्त्रियों को कमजोर बनाने के लिए बनाए गए साधन है। लड़कियों के ऊंची ऐड़ी वाले सैंडल के बारे में जर्मन ग्रीयर की पुस्तक 'फिमेल यूनाक'

में भी बताया गया है कि ये सारे साधन किस लिए लड़कियों के लिए बनाए गए हैं –''लड़कियों के ऊँची ऐड़ी वाले सैंडिल के अविष्कार के पीछे एक बहुत अच्छी बात कही गई है। पुरूष जब किसी लड़की पर आक्रमण करता है तब वह खुद को बचाने के लिए दौड़ती है। वह ज़्यादा तेज़ न दौड़े इसीलिए उनके पाँवों में हाईहील यानी ऊँची ऐड़ी वाले सैंडिल की व्यवस्था की गई।''[6]

औरत के हक में, तसलीमा नसरीन, अनुवादक मुनमुन सरकार

इस उपन्यास के माध्यम से यह बात स्पष्ट है कि शिक्षा से नारी को सोचने और समझने की शक्ति मिलती है जिससे वह अपने जीवन–शैली के बंधे–बंधाए ढर्रे से बाहर आती है और परंपरागत ओर रूढ़िगत सोच को तिलांजली देती हुई दिखती है।

'अकेला पलाश' उपन्यास का शीर्षक भी पलाश के फूल से प्रेरित है। लेखिका इस उपन्यास में लिखती है कि –''पलाश! लाख सुंदर हो, सुंदर फूल हो, पर उसमें सुगंध नहीं। उसे जुड़े में सजाया नहीं जा सकता, वह किसी भी गुलदस्ते की शोभा नहीं बन पाता। पलाश सिर्फ अपनी डाल तक ही सीमित रहता है।''[7]

इस उपन्यास की केन्द्रीय पात्र तहमीना है, जो विवाहित है और एक बच्चे की मां है। उसका पति जमशेद उससे उम्र में काफी बड़ा है। वह तहमीना का न तो सम्मान करता है और न उसे यौन संतुष्टि दे पाता है। इस कमजोरी और उपेक्षा के कारण ही तहमीना तुषार से संबंध स्थापित कर लेती है। और वह अपने पति जमशेद को छोड़ तुषार के साथ अपना जीवन व्यतीत करना चाहती है। पर समाज के डर के कारण तुषार उससे अचानक संबंध तोड़ देता है। काफी लंबे समय के बाद तुषार का एक पत्र तहमीना के पास आता है और वह पुनः उससे संबंध जोड़ने की बात करता है। लेकिन तहमीना उसके इस प्रस्ताव को ठुकरा देती है। और उसे जवाब में कह देती है कि वह उससे मिलने की कोशिश न करें क्योंकि वह अपनी जिंदगी में खुश है। तहमीना एक पढ़ी–लिखी कामकाजी स्त्री है और वह अपना निर्णय लेना जानती है इसलिए वह तुषार से जब प्यार करने लगती है तो वह उसके साथ हर समझौता करने के लिए तैयार थी, समाज और परंपरा से भी लोहा लेने को तैयार थी, परंतु कमजोर व्यक्तित्व, स्वार्थी स्वभाव वाला इंसान उसको धोखा देकर भाग जाता है।

उपन्यास में नाहिद बाजी है जो डॉ. महेश अग्रवाल से प्रेम करती है और उससे कोर्ट मैरिज भी करती है। 'अकेला पलाश' के नारी चरित्र प्रगतिशील विचारों वालें पात्रों के रूप में उभरते हैं। जो जात–पांत व धार्मिक संकीर्णताओं के खिलाफ बोलती हैं। धार्मिक दृष्टि से उदार हैं और रूढ़ियों से अपने को मुक्त रखते हैं।

उपन्यासकार की उपन्यास कला कि उपलब्धि इसमें है कि उसने संवेदना, अनुभूति और कल्पना के संयोग से वह वैचारिक आधार प्रदान किया है, तो आमतौर से कथा–साहित्य से गायब था। स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि लेखिका अपने खुले विचारों के अनुरूप बिंदास पात्रों को गढ़ती है और उनसे खुलकर बुलवाती है। और यही उनकी तकनीकी कौशल का आधार है।

संदर्भ सूची

1. मेहरून्निसा परवेज, कोरजा, पृ.171 ।
2. वही, पृ.229 ।
3. वही, पृ.71–72 ।
3. वही, पृ.181 ।
4. वही, पृ.23 ।
5. वही, पृ.72 ।
6. तसलीमा नसरीन, औरत के हक में, पृ.8 ।
7. मेहरून्निसा परवेज, अकेला पलाश, पृ.232 ।